अंक
20
शीत
2015

सफर

सफर मार्ग पर साथ–साथ

विषयः समुदाय आधारित संगठन

संपादकीय

शहरी बस्तियाँ एंव ग्रामीण देहाती दोनों ही गरीबी, कम साक्षरता, स्वयं के स्वास्थय की अपर्याप्त जानकारी, स्वास्थय सेवाओं तक आसान पहुँच का ना होना एंव अन्य अनेक समस्याओं का सामान करते हैं। इनमें से अधिकांश व्यक्तिगत रूप से नहीं सुलझायी जा सकती एंव वे संकलित प्रयासों के साथ बेहतर तरीके से सुलझायी जा सकती हैं। समुदाय आधारित संगठन एंव स्व सहायता समूह, गरीबों एंव हाशिये पर पड़े लोगों को एक साथ एकत्रित करने, एवं उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन गये हैं। स्वरोज़गार विकल्पों को प्रदान कर एवं लधु उधोग(आय उपार्जन गतिविधियों) की स्थापना करके ग्रामीण जीवनों को बेहतर जीवन एवं निर्धन व हाशिये पर रहने वाले लोगों का क्षमता विकास किया जा सकता है। महिलाओं के आत्मविश्वास व आत्म सम्मान के स्तर में सुधार लाने के अलावा, समुदाय आधरित संगठन एक साथ कार्य करते हैं जिससे कि स्वास्थय सेवाओं, शिक्षा, जलापूर्ति, स्वच्छता एवं यातायात तक सेवाओं, शिक्षा, जलापूर्ति, स्वच्छता एवं यातायात तक उनकी पहुँच में सुधार हो एवं इन प्रयासों के प्राप्त कर सकें। इ. एच. ए. के लिये, स्व सहायता समहों के संगठनों को सहयोग देना एक महत्वपूर्ण रणनीति बन गई है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के अत्यधिक निर्धनों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

सफर का यह 20वां अकं समुदायों में स्व सहायता समूहों एवं समुदाय आधारित संगठनों के महत्त्व, समुदायों में सशक्त समुदाय आधारित संगठनों के निरंतर परिवर्तन की सफलता की कहानियों पर केंद्रित हैं। अब से इस अंक के साथ प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंधन का एक नया स्तंभ भी जुड़ गया है जिसमें परियोजना कर्मचारियों के लिये अत्यधिक आवश्यक जानकारियाँ दी गईं हैं।

आप इसे पढ़ने का आनंद उठायें!

फीबा जैकब

अन्दर क्या है...

संपादकीय 1
चॉकों की चाय का आलेख 2
सफर 3
स्थानीय लोगों के लिये स्थानीय निर्माण 4
सफलता की कहानी 7
साक्षात्कार 11
14
शासन एवं वित्तीय प्रबंधन 15
एच.आर. गतिविधियाँ 16

समुदायिक स्वास्थ एवं विकास
(इम्मानुएल हॉस्पिटल एसोसिएशन)
द्वारा प्रकाशित

चॉकों की चाय का आलेख

किस वजह से इ. एच. ए. सामुदायिक विकास के आधार के लिये सामुदायिक संगठन (स्व सहायता समूह एवं समुदाय आधरित संगठनों को सम्मिलित करके) पर केंद्रित हैं? हमारे अधिकांश समुदाय हाशिये पर, निर्धन अथवा निःशकत हैं। वे मूलभूत कारक जिनको संबोधित किया जाना है उनमें सम्मिलित हैः महिलाओं का निम्न स्तर, असाक्षरता, परंपरागत हानिकारक रीतियाँ, गरीबी व निर्णय लेने की स्वतंत्रता में कमी, जाति व्यवस्था, विपत्ति एवं हानिकारक आस्था।

सत्त सामुदाय विकास के उपरोकत दिये गये सिद्धांत के अंर्तगत निम्नलिखित तथ्य हैं–:

1. विकास बाहर प्रदर्शित होने से पहले आंतरिक होना चाहिये। किसी भी तरह के परिवर्तन को आकार लेने से पहले यह आवश्यक है कि पहले व्यक्तिगत रूप से लोगों की दिमागी रूप रेखा में परिवर्तन हो एवं उसके बाद समुदाय में।

ये परिवर्तन जीवन के निम्नलिखित क्षेत्रों में होने चाहिये–:

अ) आध्यात्मिकः सत्य का ज्ञान जो कि उन्हें भय व दासता से स्वतंत्र करेगा। अधिकांश चीजें जो कि हमारे ग्रामीणों को बंधत्त्व में रखती हैं वे हैं परंपरागत रीतियां, अंधविश्वास, एवं अस्वस्थ आस्था व रिवाज़।

ब) पहचानः धर्मशास्त्र के अनुसार स्वयं की समझ होना– विशेष रूप से महिलाओं को यह जानना आवश्यक है कि वे परमेश्वर के स्वरूप में सृजी गयी हैं एवं परमेश्वर की नज़रों में उनकी कीमत उतनी ही है जितनी उन लोगों की जिनके लिये मसीह ने अपनी जान दे दी।

स) स्वयं मेंः भविष्य के लिये आत्मविश्वास एवं उम्मीद– स्वयं की उचित समझ जिसके साथ कुछ ऐसे तथ्य जुड़े हों जो किसी भी कार्य को करने से पहले दिमाग में आने वाले छोटे – भय से जीतना सिखाते हैं, इनके परिणामस्वरूप स्वयं का स्व सम्मान व आत्मविश्वास बढ़ता है।

चक्रिय विश्वदर्शन की समझ से हटक़र रेखीय दर्शन जो कि परमेश्वर के राज्य की ओर जाता है कि समझ विकसित करने से लोगों के पास भविश्य की उम्मीद मिलेगी की समुदाय में विकास एवं प्रगति बढ़े।

2. **दीर्घकालीन निरंतरता के लिये समुदायों की भागीदारी व स्वामित्व होना महत्त्वपूर्ण हैं।–** छोटे संगठनों का निर्माण करना एवं उन्हें आपस में एक सहकारिता की तरह संबद्ध करने से वे संसाधनों को साझा करने में सक्षम हो जाते हैं एवं कमज़ोर–सशक्त होते हैं, वे बेहतर चुनावों को करने के लिये सक्षम होते हैं एवं सरकारी अधिकारियों को अधिक उत्तरदायी बनाते हैं। यह उनके मोल भाव करने की क्षमता में भी वृद्धि करता हैं एवं उन्हे सक्षम करता है कि वे आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रदाताओं से अपने लोगों के लिये सेवायें लें।

3. **समुदायों के नये सिद्धांतों का निर्माण–** जागरूकता कार्यक्रमों शिक्षा एवं समूहों के विकास द्वारा यह किया जा सकता है।

उदाहरण के लिये, जब समुदाय में अधिकांश लोग स्वच्छता सिद्धांतों एवं स्वस्थ जीवन शैली को अपनाते हैं तब यह सिद्धांत बन जाता है व कई पीढ़ी तक निरंतर चलता रहता है।

4. सर्वप्रथम आधारभूत आवश्कताओं को संबोधित करने से प्रारंभ करें एवं उसके पष्चात् व्यवसायिक रूप से चिन्हित् किये गये आवश्यकताओं को। उदाहरण के लिये महिलाओं की सामाजिक आवश्यकताओं से प्रारंभ करें कि वे निरंतर मिल सकें जिससे कि वे सक्षम हो सके, कि वे नये संबंधों का निर्माण कर सकें एवं एक दूसरे को प्रोत्साहित कर सकें; इनके बाद वित्तीय आवश्यकताओं को संबोधित करें–आपातकालीन स्थितियों में ऋण सुविधा को बेहतर बनाना, तत्पश्चात उत्पादन ऋणों की उपलब्धता, इसके पश्चात विभिन्न स्वास्थय मुद्दे जैसे जच्चा की देखभाल, बीमारियों की रोकथाम इत्यादि।

अतैव स्वसहायता समूहों एवं समूदाय आधारित संगठन सामुदायिक विकास एवं स्वास्थय का आधार बन गये हैं! ऐसा हो कि हम ''परियोजना केंद्रित'' होने के बजाय उपयुक्त समय देकर मज़बूत नीवों का निर्माण करें!!

डा. अशोक चॉको, निदेशक– इम्मानुएल हॉस्पिटल एसोसिएशन
समुदायिक स्वास्थ एवं विकास कार्यक्रम

सफर

समुदाय आधारित संगठन

(रेव्ह. प्रकाश जार्ज)

जब हम बाइबल को पढ़तें हैं, तब हम यह समझते हैं कि परमेश्वर अपनी योजनाओं व उद्देश्यों को पूरा करने के लिये एवं अपने दर्शन को संपादित करने के लिये व्यक्तियों एवं समुदायों को पुकारता है। इसी कारण उसने अब्राहम, इसहाक, याकुब, दाऊद, पौलुस आदि को चुना। इसलिये उसने कुछ लोगों की रचना की जिन्हें इस्राएल कहा जो कि अब कलीसिया हैं। इन दोनों को हम बहुत ही अच्छी तरह से समुदाय आधारित संगठन मान सकते हैं। परमेश्वर इन दोनों समुदाय आधारित संगठनों को जीवन जीने के लिये कुछ सिद्धांत एवं अस्तित्त्व बनाये रखने के लिये कुछ उद्देश्य दिये। इनकी प्रथमिकता स्वयं का जीवन जीने के लिये नहीं थी अपितु स्वयं के अलावा दूसरों के जीवन में आषीशों का कारण होने के लिये आवश्यक थी। चर्च (कलिसिया) के लिये यह कहा जाता है कि, यही एक ऐसी समिति है जो कि ऐसे लोगों के लिये अस्तित्त्व में है, जो इसके सदस्य नहीं हैं। बाइबल एंव कलीसिया के इतिहास को पढ़ने से हमें यह ज्ञात होता है कि परमेश्वर इन दोनों समुदाय आधारित संगठनों से क्या प्राप्त कर सकते थे यदि इन संगठनों ने स्वयं को परमेश्वर द्वारा निर्धारित सिद्धांतों/आदर्शों के अनुसार चलाया होता

गैर सरकारी संगठनों के क्षेत्र में समुदाय आधारित संगठन की स्थापना पर अधिक बल दिया जाता है, जो कि अच्छा है। आपके पास विभिन्न तरह के समुदाय आधारित संगठन है– जैसे कि स्व–सहायता समूह, महिला मंडल, सास मंडली, किशोरों के समूह आदि। ये समूह अपने आप में बहुत ही अच्छे हैं चूंकि ये सामाजिक एवं आर्थिक रूपांतरणों के लिये प्रयासरत् हैं, यह बहुत ज्यादा आवश्यक भी है। लेकिन इनकी प्रवृत्ति अंर्तदृश्यता की होती है। किंतु समुदाय में स्थायी परिवर्तन के लिये आध्यात्यिक कोण का होना आवश्यक है। परमेश्वर को समुदाय आधारित संगठन का केंद्र बनना होगा। समुदाय आधारित संगठनों के सदस्यों में मसीह की स्थापना हो रही है। सदस्यों को यीशु मसीह से परिचय कराने के लिये हमें संकोच नहीं करना चाहिये। इसके कारण स्थायी परिवर्तन एंव स्थिरता की ओर अग्रसर होंगे। यीशु ने कहा,"और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। (मत्ती 16:18)

स्थानीय लोगों के लिये स्थानीय निर्माण– समुदाय आधारित संगठन

(कुलदीप सिंह,परियोजना निदेषक, सहयोग और कारी षहरी परियोजना, नई दिल्ली)

समुदाय आधारित संगठन–

भारत में विभिन्न स्तर पर समुदाय आधारित संगठनों के कार्य करने की दीर्घ परंपरा चली आ रही है। विभिन्न विकास वाहकों ने यह उत्तरोत्तर रूप से एहसास किया कि भारत में निर्धनों एवं हाशिये पर पड़े लोगों के समुदायों के वित्तीय बेहतरी एवं विकास के लिये अधिक प्रतिबद्धता के साथ ध्यान देना अब महत्तवपूर्ण हो गया है। यह तभी हो सकेगा जब हम उन लोगों के आवष्यक मुद्दों को महसूस कर सकेंगे जो कि वंचित हैं व शुण्डाकार स्तंभ में सबसे नीचे पाये जाते हैं। अकसर राज्य अधिकार एवं विकास संबंधी संस्थायें गरीब समुदायों के लिये योजनाओं की रूपरेखा तैयार करती हैं लेकिन वे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल हो जाती हैं क्योंकि परिचर्चा के लिये सीमित नागरिक ही सहभागी होते हैं। यदि किसी भी तरह की योजना स्थानीय लोगों के साथ साझेदारी में नहीं होगी तो ये सिर्फ एक स्वपन की तरह होगा। समुदायों को सुनना, इ.एच.ए. सामुदायिक स्वास्थय एवं विकास परियोजनाओं की मुख्य रणनीति है जिससे भागीदारिता कार्यक्रमों का क्रियान्वयन हो सके। पिछले दो दशकों से इ.एच.ए. में कार्यरत रहते हुये मैंने यह सीखा कि सत्त–दीर्घ कालीन विकास के लिये हमारा ध्यान केंद्र स्थानीय समुदायों का क्षमता निर्माण करना है। यह उतना आसान नहीं जितना कि यह सुनाई पड़ता है क्योंकि इसमें स्थानीय रहवासियों को भी सम्मिलित करना होता है। समुदाय आधरित संगठनों की इस प्रकार सफलता की कई कहानिया हैं कि क्षमता वृद्धि होने पर न सिर्फ सरकारी सेवायें एवं सुविधायें प्राप्त कीं वरन् साथ ही समुदायों में व्यवहार परिर्वतन को संभव किया। विकास के लिये समुदाय आधारित संगठन हमेषा परिस्थिति का सही आंकलन करने के लिये श्रेष्ठ स्थिति में होते हैं। यदि गैर सरकारी संगठन हस्तक्षेप को बढ़ाते हैं तो वे समुदाय आधारित संगठनों को सशक्त करते हैं कि वे योजना बना सकें एवं किसी एक महत्त्वपूर्ण कारक के लिये एक साथ कार्य कर सकें

किसकी सच्चाई आधिक मायने रखती है?

विकास कार्यों के वाहक यह महसूस करते हैं कि व्यक्तिगत व्यवहार एवं रवैया, असली भागीदारी का आधार होता है। बार बार हम हड़बड़ी मचाते हैं, एवं हमारी सच्चाई को उन पर प्रभावित करते हैं, दबाव बनाते हैं एवं उन कमज़ोरों व आघात करने योग्य लोगों को नकार देते हैं। गरीबों को सशक्त करने के लिये आवश्यक है कि पहले हम बदलें, उनके पारस्परिक क्रिया के लिये नये रास्ते अपनायें, नियंत्रक शिक्षक, तकनीकी के प्रवर्तक ना बनें अपितु वाहक, प्रशिक्षक एवं सहयोगी बनें व कमज़ोरों व हाशिये पर पड़े लोगों को सक्षम बनायें कि वे स्वयं को अभिव्यक्त करें व अपनी सच्चाई का उचित आंकलन करें जिससे वे योजना बना सकें एवं उस पर क्रियान्यवयन कर सकें। हमें भिन्न तरह से व्यवहार करना होगा एवं अपने रूख को बदलना आवश्यक होगा।

स्थानीय जानकारी का कोई विकल्प नहीं है

सामाजिक समस्याओं एवं स्थानीय मुद्दों को सुलझाने के लिये समुदाय आधारित संगठन के माध्यम से समुदाय आधारित तरीका उचित होता है ना कि बाह्य वाहकों के द्वारा हस्तक्षेप करना। यह कमज़ोर समूहों एवं उन लोगों का सहयोग करता है जो इससे संबंधित हैं जिससे पारिवारिक सांस्कृतिक पद्धतियों एवं सहायक संरचना को पुर्नस्थापित किया जा सके। असलियत में समुदाय आधारित तरीकों के उद्देष्य हैं संबधित लोगों के सम्मान को सुनिश्चित करना एवं उन सभी कारको को सशक्त करना जिससे कि एक साथ काम किया जा सके एवं समुदाय के लोगों को सहयोग प्राप्त हो कि वे अपने मानवाधिकारों का आनंद उठा सकें। शहरी एवं ग्रामीण समुदाय आधरित संगठनों ने स्थानीय, जटिल

एवं भिन्न यथार्थों को अभिव्यकत एवं उनका आंकलन करने योग्य क्षमता का प्रदर्शन किया है जो कि अक्सर इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा किये गये आंकलओं का एक छोटा सा समूह जो कि SEWA (SELF EMPLOYED WOMEN ASSOCIATION) के नाम से जाना जाता है अब असंगठित तरह से काम करने वाली महिलाओं के लिये एक बड़ी मद्द के रूप में उभरा है जिससे कि वे सामाजिक सुरक्षा के साथ नियमित आय प्राप्त कर पाती हैं। अधिकाश्षतः समुदाय आधारित संगठनों में अत्यधिक क्षमता है लेकिन बदकिस्मती से विकास के क्षेत्र में इन्हें वस्तु अथवा विषय के रूप में देखा जाता हैं। उनसे उनके कौशल, ज्ञान एवं जानकारी को लिया नहीं जा सकता। शहरी बस्तियों एवं ग्रामीण समुदायों में समुदाय आधारित संगठनों द्वारा पहल की जाती है कि समुदाय के लघु व दीर्घकालीन समस्याओं को सुलझाया जा सके एवं सामुदायिक मुद्दों को संबोधित किया जा सके।

सामुदायिक संगठनों के साथ काम करना तब प्रचलन में आया जब यह दानकर्ता संस्थाओं के लिये मानक बन गया और तब सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थायें सामुदायिक संगठनों का इस्तेमाल अपने कार्यक्रमों को लागू करने में लगे। चूँकि सामुदायिक संगठन ज़मीनी स्तर पर काम करते हैं तो यह ज़रूरी है कि उन्हें अपनी वास्तविकता के प्रकटीकरण, वास्तविकताओं को प्राथमिकता में रखना तथा उन पर गौर करने के लिये सक्षम बनाया जाये।

अच्छे सामुदायिक संगठन के लक्षण :

★ उसके सदस्य उसी क्षेत्र में रहने वाले तथा विभिन्न समूहों से हों (लिंग, जाति, वर्ग)। इनमें सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोग जैसे विकलांग, हिज़डे, आदि भी होने चाहिये।

★ उनके द्वारा प्राथमिकता के विषयों की पहचान की जानी चाहिये।

★ वे अपनी कार्यशैली में पारदर्शी व उत्तरदयिक होने चाहिये।

★ उनके कर के सीखना चाहिये तथा उनके पास समस्या सुलझाने की क्षमता, नेटवर्क एवं संसाधनों के लिये गठजोड़ बनाने की क्षमता होनी चाहिये।

★ अनके पास साझा दर्शन, प्रतिबद्धता एवं समाज के बहिष्कृत एवं गरीब लोगों को उठाने के मूल्य होने चाहिये।

★ अपने विकास के लिये स्थानीय संसाधनों को जुटाने की क्षमता होनी चाहिये।

★ किसी भी मुद्दे को स्थानीय लोगों के साथ मिलकर सुलझाना चाहिये।

तस्वीर द्वाराः शेम राओमै

महत्तपूर्ण सीखने योग्य बातें:

सामुदायिक संगठनों के साथ ग्रमीण एवं शहरी क्षेत्रों में काम करने के मेरे अनुभवओं के आधार पर निम्न मुख्य शिक्षायें है–:

- सामुदायिक संगठनों की भूमिका समुदाय द्वारा चुने गये मुद्दों के लिये वकालत करना तथा सेवा एवं संसाधनों तक पहुँचने के लिये नेटर्वक करना। सामुदायिक संगठन सुचनाओं को साझा करने, साझेदारी में कार्य करने, समुदाय को प्रेरित करने तथा संस्थाओं से जुड़ने के लिये महत्त्वपूर्ण है।

- सामुदायिक संगठनों के प्रयास जिनको की सामूहिक कार्य एवं P.P.P (Public People Partnership) के रूप में जाना जाता है।

सहयोग परियोजना के द्वारा मैने यह सीखा कि यदि सामुदायिक संगठन किसी फेड़रेशन का हिस्सा बन जाता है तो वह वकालत एवं नेटवर्किंग अच्छे से कर सकते है। सामुदायिक विकास में सामुदायिक संगठनों की भूमिका महत्तवपूर्ण है।

सामुदायिक संगठनों की मुख्य चुनौतियाँ :

चिन्हित की गई कुछ सामान्य चुनौतियाँ है– खराब संवाद, समुह को चलाने के कौशल का अभाव, संसाधनों का अभाव, नेतृत्व का अभाव, कम आय, सहायता का अभाव, पारदर्शिता एवं जवाबदेही का अभाव तथा क्षमता वृद्धि की रणनीति का अभाव। खासकर मलिन बस्तियों में सामुदायिक संगठनों को चलाने के प्रयास अक्सर विभिन्नता एवं ज़मीन का मालिकाना हक़ ना होने की वजह से बेकार हो जाते है।

सामुदाय आधारित संगठनों को सक्षम बनाने के लिये मददगार कारक :

सामुदायिक संगठनों को मज़बूत करने में निम्नलिखित कारक प्रभावी होते है–:

- ★ बस्ती में संपति में चिन्हित करने में सहायता करना तथा इसके लिये साधारण भाषा एवं युवा/महिलाओं को प्रक्रियाओं में शामिल करना जरूरी है।
- ★ व्यस्क शिक्षा पद्धति का इस्तेमाल करना तथा अनुभव के आधार पर सीखने की प्रक्रिया प्रारंभ करना।

समुदाय में नेतृत्व प्रशिक्षण को बड़े स्तर पर करना। संपति आधारित सामुदायिक विकास की प्रक्रिया को अपनाना जिससे कि लोग उनके पास उपलब्ध संपति एवं कौशल पर निर्माण कर सके।

तस्वीर द्वाराः अंजलि सिंह

निष्कर्ष:

सामुदायिक संगठन विकास के महत्तवपर्ण धटक है क्योंकि वे समुदाय में अग्रणी भूमिका में रहते है तथा समस्त सामुदायिक विकास के प्रयासों में शामिल होने के लिये अच्छी स्थिति में होते है। हमें आवश्यकता है कि हम ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में रहने वालों को सामुदायिक संगठनों के साथ साझेदारी में सशक्त बनाने की अपनी प्रक्रिया का पुर्नवालोकन एवं मूल्यांकन करें। सामुदायिक संगठनों की निरंतरता बनाये रखने के लिये यह जरूरी है कि परियोजना कार्यकर्ता अपनी भुमिका को पहचाने और उसे उत्प्रेरक के दायरे से बाहर ना जाने दे ताकि चलती रहने वाली निर्भरता कम की जा सके।

सफलता की कहानी

स्व सहायता समूह – गरीबों एवं हाशिये पर रहने वाले लोगों के लिये

सशक्तिकरण का एकमात्र माध्यम!

(द्वारा तुषार परियोजना, हरबर्टपुर मसीही अस्पताल, इ.एच.ए. । सहयोग – श्री नित्य मसीह,

पी.ए.शिफा, एम. एच. परियोजना, श्री राजीव सिंह,)

लेखनः राजकमल, परियोजना प्रबंधक, सामुदायिक स्वास्थय विभाग

इतिहास

सन् 1992 के प्रांरभ में स्व सहायता समूह व्यूह रचना सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्रों में गरीबी को न्यून करने के लिये एक महत्त्वपूर्ण प्रहार था। 1996 में तुशार परियोजना प्रारंभ हुई। इ. एच.ए की यह स्वचलित परियोजना देहरादून जिले के साहसपुर विकास खंड में मांडूवाला गाँव में स्थित है।

इसके मुख्य व्यूह सिद्धांतों में से एक था गरीबों एवं हाशिये पर लोगों को सशक्त करना एवं बेहतर गैर वित्तीय सेवाओं एवं तरीकों के द्वारा गरीबी में अवरोध लायें। इस परियोजना ने समुदायों को आपस में जुड़े हुये स्व सहायता समूहों के प्रसार, संगठन एवं विकासपरक प्रयत्नों के द्वारा जोड़ा।

इस परियोजना ने स्थानीय ग्रामीण कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया एवं स्टॉफ के लोगों ने प्रत्येक गाँव की महिलाओं की लामबंदी की जिससे स्व सहायता समूहों की पहल की जा सके। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक घरेलू स्तर में आर्थिक लाभ होना सामाजिक समानता एवं महिलाओं में सशक्तिकरण था। तुषार ने मुख्य संदशों के द्वारा जागरूता को बढ़ावा दिया कि किस तरह से स्व सहायता समूह गरीबों के

Photo- Mr Raj Kamal

लिये एक साधन है जिससे आय कि असमानता के प्रभाव को सरल किया जा सके; उनकी बचत के सुरक्षित, विश्वसनीय, एवं सामर्थनुसार कोषों को पहचानने के लिये; अधिक लाभ प्रदान करने वाले निवेश अवसरों का अत्याधिक फायदा लेना; एवं भविश्य में होने वाली विपति एवं जोखिम के लिये स्वयं को सुरक्षित करना।

मध्यस्थता

प्रारंभिक दिनों में, समुह के सदस्य 50–100 रूपये की अपनी बचत राशि को महीने में एक बार, या दो महीने में एक बार लेकर आते थे। शुरूआत में समुहों को ''गुल्लक'' प्रदान किये। जब कुल बचत राशि कुछ अर्थपूर्ण हुई तब समुह को बैंक में खाता खोलने के लिये प्रोत्साहित किया गया। परियोजना के कार्यकर्ता लगातर समूहों को निर्देश देते रहते एवं उन्हें सक्षम बनाते कि वे खाते का पूरा रिकार्ड रखें ऋण देने संबंधी उचित निर्णय लें एवं सही समय पर ऋण अदायगी के फायदों को समझें व प्रोत्साहित करें। इस प्रकटीकरण एवं सतत् प्रशिक्षण ने समूह के सदस्यों की सहायता की कि लाभों का निरंतर फायदा उठा सके। तुषार परियोजना द्वारा विकास के लिये स्वसहायता समूहों को सहयोग के अभ्यास के फलस्वरूप उस संपूर्ण क्षेत्र में स्व सहायता समूह ने एक आंदोलन का रूप लिया। जितना

ज़्यादा लोग इसके लाभों को समझने लगे उतने ज़्यादा महिला समूहों की स्थापना होने लगी।

परिणाम/प्रभाव

नाबार्ड(राष्ट्रीय कृषि एवं विकास बैंक) के सहयोग से स्व सहायता समूहों के बैंक से जोड़ा गया जिससे सूक्ष्म ऋण सेवायें एवं लघु उधोगों के अवसर प्राप्त हुये। स्व सहायता समूहों के हस्तक्षेप से सबसे प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ कि समूहों की महिलाओं ने चार पंजीकृत सहाकारिता की पहल की जो कि उस क्षेत्र की ऐसी सहकारितायें हैं जिनका प्रबंधन सिर्फ महिलायें संभालती हैं। तुषार एवं नाबार्ड के लिये यह एक महत्त्वर्ण उपलब्धि थी जिसको उन्होंने अपने वार्शिक रिपोर्ट में दर्षाया। ये सहकारिता अभी भी अस्तित्त्व में हैं। तुषार एवं नाबर्ड के लिये यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी जिसको उन्होंने अपने वार्षिक रिपोर्ट में दर्शाया। ये सहकारिता अभी भी अस्तित्त्व में हैं एवं वे डेयरी फार्म, कृमि उत्पादन जैविक खाद, सिलाई–बुनाई प्रषिक्षण केद्र आदि भी संभालती हैं। तुषार के सबसे पहले कर्मचारी श्री नित्य मसीह एवं श्री राजीव सिंह ने यह अनुभव किया कि महिलायें पहले से सशक्त हो गयी हैं, समूह का ज़ीवन अधिक बलदायक हो गया है एवं महिलाओं की बचत दर में वृद्धि हो गयी है। यह भी देखा गया कि बच्चों की उच्च शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा में बेहतर पारिवारिक स्वास्थय, आश्रय एवं सामान्य कल्याण में सुधार आया है। उदा. के लिये समूह ने एक लड़की को B.Sc. नर्सिंग की पढ़ाई के लिये भेजा एवं लड़के को समूह से ऋण लेकर कार्य करने हेतु मलेशिया भेजा।

चुनौतियाँ:

- बचत एवं समूह सदस्यों द्वारा लिये गये ऋण का सतत प्रबंधन
- वित्त प्रबंधन संबंधी कुषलता को आपस में सीखना जिससे प्रत्येक सदस्य समान रूप से कुशल एवं आत्म विश्वासी हो।
- सीखने की प्रक्रिया सदस्य समान रूप से कुशल एवं आत्म विश्वासी हो।
- सीखने की प्रक्रिया एवं जानकारी साझा करने की निरंतरता जिससे ज्ञान में वृद्धि हो सके।
- निर्देषों संबंधी निरंतर सहयोग एवं नेतृव के विकास में निरंतरता

सीखे गये सबक

स्वसहायता समूह के हस्तक्षेप की राह में परियोजना ने अनेके सबक सीखे। इन समूहों को उनके शस्त्रों से सुसज्जित करने के लिये आवश्यक है कि कार्यक्रमों में पारदर्शिता व ईमानदारी हो एवं मज़बूत संबंध हों। तभी गरीब महिलाओं एवं दलित लोगों के जीवन में सशक्तिकरण एवं संपन्नता परिलक्षित होगा। और उसी दौरान, प्रत्युत्तर लेने हेतु मुलाकात एवं निर्देशों को साक्षा करने से समूह की संयुक्त कार्यवाही मज़बूत होती है।

समरूप मॉडल विकसित करने की संभावना

स्व सहायमा समूह का प्रारूप वर्तमान में भी प्रभावशाली विकास, महिलाओं के सशक्तिकरण, एवं सामाजिक समानता विशेष रूप से दबाने वाली सांस्कृतिक अभ्यासों को और हमारे ग्रामीण समाज के पारिवारिक वातावरण एवं व्यवहारो को खत्म करने में स्व सहायता समूहों ने यह साबित किया कि वे आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरण, स्वास्थय, राजनैतिक एवं जीवन के नेतृत्त्व प्रभाव क्षेत्रों में परिवर्तन लाने के लिये श्रेष्ठ औजार हैं।

समुदाय आधारित संगठन–सतत विकास प्रक्रिया में संलग्न सहकारिता

(बासवराज, परियोजना प्रबंधक, सी एच डी पी चांपा)

स्थान

प्रत्येक परियोजना समूह के लिये समुदाय आधारित संगठनों का निर्माण एवं सतत विकास के लिये उन्हें मज़बूत करना, एक चुनौती की तरह है। समुदाय आधारित संगठनों की स्थापना मुख्य उद्देश्य कार्यक्रमों एवं योजनाओं का क्रियान्वयन करना था। ये पहले समुदाय आधाारित संसाधनों के विकास पर केंद्रित नहीं थे जिसके परिणामस्वरूप समुदाय के सदस्यों की रूचि इन कार्यक्रमों के लिये सीमित थी।

कहानी

परियोजना समूह ने समुदाय आधारित संगठनों एवं सहाकारिता की स्थापना की एवं वर्तमान में 250 समुदाय आधारित संगठनों (150 स्व सहायता समूह, 100 किसानों के समूह) एवं कानूनी पहचान के साथ 5 सहकारिता हैं।

बायो फर्टिलाइज़र को तैयार करते हुये
तस्वीर–श्री बसवराज

जैसा कि यह पहले ही बताया जा चुका है समुदाय के लोग समुदाय आधारित संगठनों के विकास के लिये योगदान नहीं दे रहे थे एवं उनकी रूचि एवं स्वामित्त्व में निरंतरता नहीं थी। तथैव समुदाय आधारित संगठनों के मुखिया एवं परियोजना कार्यकर्ताओं ने "भागीदारिता अनुसंधान एवं कार्य" के औजारों की सहायता से एक गहन अध्ययन किया।

इस अध्ययन से प्राप्त सुझाव निम्नलिखित हैं:

★ समुदाय आधारित संगठनों के सदस्यों के पास उनके स्वयं के विकास के लिये स्पष्ट दर्शन होना चाहिये।
★ समुदाय आधारित संगठनों के ऐसे आय उपार्जन कार्यक्रम समुदायों के संसाधनों पर आधारित हों (लोग, पानी, ज़मीन, जानवर एवं जंगल)
★ समुदाय आधारित संगठनों के मुखिया एवं परियोजना समूह को ऐसे प्रारूप की रचना करनी चाहिये जो कि समुदायो के संसाधनों के अनुसार विकास पर आधारित हों।
★ समुदाय आधारित संगठनों के मुखिया एवं परियोजना समूह को कार्यरत संरचनाओं का विकास करना है जिससे जिम्मेंदारियों को बांटा जा सके।

प्रारूपों की एक झलक

महिलाओं के स्वसहायता समूह का दर्शन– स्वास्थ एवं समुदाय में महिलाओं का सम्मान था एवं किसानों के समुह का दर्शन मिट्टी एवं किसान के जीवन की रक्षा करना था। इस दर्शन का निर्माण करने हेतु हमने विभिन्न भागीदारिता अनुसंधान एवं कार्यों के औजारों, आभ्यासों का उपयोग किया, अनेक विकासात्मक प्रारूपों उनके परिणामों, प्रभावों व निरंतरता का अध्ययन किया।

ममममममममममममममममममममम

हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बिना सक्रिय भागीदारी एवं आपसी सहयोग के प्रारूपों को विकसित करना शायद ही संभव होगा, जो कि कुछ इस तरह है कि वे अपने संसाधनो को एक साथ एकत्रित कर उसे समुदाय आधारित संगठनों में सभी के लिये उपलब्ध करायें। उन्होंने अपने फार्मों में हानिकारक पदार्थों का उपयोग करने से भी परहेज़ किया है। यह प्रारूप एक समान सोच रखने

सब्जियों की क्यारी–समुदाय आधारित संगठनों के सदस्यों द्वारा एक पहल
तस्वीर–श्री बासवराज

वालों के संयुकत तत्वाधान में सृजा गया। इस प्रारूप का विस्तार करने एवं इसमें निरंतरता बनाये रखने के लिये हमने समुदाय के अनुकूल क्रियान्वयन संरचना का निर्माण किया।

गतिविधियाँ

- समुदाय के आंतरिक एवं बाह्य संसाधनों को कार्य में इस्तेमाल करना
- सूक्ष्म योजनाओं को तैयार करना एवं उनका क्रियान्वयन
- बीज का प्रबंधन करना एवं उसके इलाज के लिये इंतज़ाम करना

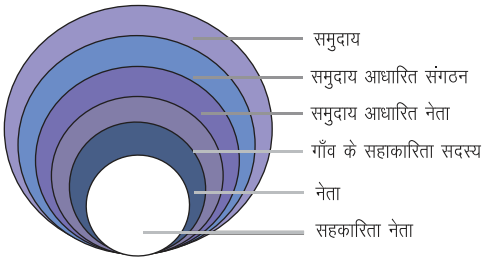

- जैविक खाद एवं कीटनाशकों को अपने उपयोग एवं बिक्री के लिये तैयार करना
- कृषि एकीकृत उत्पादों का उत्पादन
- स्थानीय, विकासखंड एवं जिला स्तर पर बाज़ार संबंधी संपर्क सूत्रों की स्थापना करना
- लाभ का उचित वितरण एवं प्रारूप में पुर्ननिवेश

निष्कर्ष

इस एकीकृत जैविक कृषि ने समुदाय आधारित संगठनों की ने समुदाय आधारित संगठनों की महिलाओं को पहचान, सम्मान एवं बेहत्तर स्वास्थय प्रदान किया एवं कृषकों व मिट्टी को परंपरागत खेती के तरीकों से निज़ात दिलायी। वे प्रत्येक माह/प्रत्येक फसल/प्रत्येक एकड़ से 4000–5000 प्रति माह कमाने लगे। इसके फलस्वरूप गाँव में और अधिक कार्य बढ़ने लगे एवं पोषक खाद्यान्नों व सब्ज़ियों की उपलब्धता बढ़ गयी। इनसे प्राप्त लाभ उनके जीवन यापन के लिये पर्याप्त थे। एवं उनके स्वयं के विकास एवं उनके संगठन व अन्य परियोजना को सहयोग के लिये पर्याप्त थे। संबंधित विभागीय अधिकारी एवं समीपवर्ती गाँवों के समुदाय आधारित संगठन इन प्रारूपों को अपना रहे हैं व इनका विस्तार कर रहे हैं।

समुदाय आधारित संगठन के सदस्य, सी एच डी पी चांपा
तस्वीर– श्री बासवराज

साक्षात्कार

सुश्री एस्तेर चक्रपाणी परियोजना निदेशक (2002–2005) तुषार परियोजना, देहरादून के साथ एक दूरभाशीय साक्षात्कार

(वर्तमान में एस्तेर जी, मेट्रो दिल्ली इंटरनेषनल स्कूल में प्रशासनिक निदेषक के पद पर कार्यरत् हैं)

(द्वारा फीबा प्रकाश, सह संपादक, सफर)

सफर – कृपया आप अपनी परियोना एवं उसके मुख्य पहल के बारे में कुछ जानकारी दीजिये!

सुश्री एस्तेर चक्रपाणी – स्व सहायता समूह एवं समुदाय आधारित संगठनों के साथ कार्य करने का मेरा अनुभव इ. एच. ए. के साथ प्रारंभ हुआ। मैंने देहरादून में इ. एच. ए. के तुषार स्वास्थय एवं विकास परियोजना में कार्यभार ग्रहण किया व सन् 1998 से 2005 तक इ. एच. ए. में कार्य किया। इस परियोजना में पहले से ही स्व सहायता समूह सक्रिय थे जिनकी पहल पैसे की बचत करने, एक साथ एकत्रित होने एवं कुछ ऐसा करने के उद्देश्य से हुई थी जिससे किसी तरह का लाभ प्राप्त हो सके। वे बचत करने में सक्षम थे एवं अपने ही समुदाय के लोगों की अपेक्षा कम व्याज दर पर ऋण दे सकते थे। उस स्थान में ये समूह जँगल की आग की तरह फैलने लगे, लोग ऐसे समूहों के लाभों की अहमियत समझने लगे थे। जब वे लोग ऋणों के लेन देन से ऊपर पायदान पर बढ़ने लगे – वे सामाजिक परिवर्तन के वाहक हुये एवं अन्य क्षेत्रों में सषकत होने लगे। ये सभी समूह महिलाओं के समूह थे क्योंकि हमारा उद्देष्य महिलाओं को सशकत करना था। अधिकांश महिलायें अशिक्षित थीं। इसी तरह से स्व सहायता समूहों के द्वारा वे समुदायों में होने वाली समस्याओं को चिन्हित करने में सक्षम हो रहीं थीं।

सहकारिता की स्थापना – 50–60 स्व सहायता समूहों को एक मंच पर संगठित किया गया एवं सरकार के स्व–विश्वस्त सहकारिता एक्ट के तहत सहकारिता की स्थापना की गयी। इस तरह से हम उतरांचल में स्व–विश्वस्त सहकारिता एक्ट के तहत महिलाओं की पहली सहकारिता को सफलतापुर्वक स्थापित कर पाये। इन नव निर्मित सहकारिताओं ने अपनी सफलता का भव्य तरीके से उत्सव मनाया जहाँ राज्य के मुख्य सचिव श्री आर. एस. टोनिया जी एवं ग्रामीण विकास के मुख्य सचिव, मुख्य अतिथि थे साथ ही विभिन्न विभागों के सचिवों ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर महिलाओं का उत्साहवर्धन किया। इन सहकारिओं को सषकत बनाया गया कि वे स्वयं की स्थिति का निर्माण करें एवं लोक प्रशासन व उच्च प्रशासनिक संसाधनों पर अपना प्रभाव बनाये रखें।

इस तरह से समुदाय ने यह महसूस किया कि ये समूह उनकी मांगों से ज़्यादा उनकी सहायता कर रहे हैं एवं बेहतर तरह से कार्यरत हैं। इसके अलावा वहाँ आपस में विश्वास की अधिकता थी ऋण वापसी में किसी तरह की त्रुटि नहीं थी एवं वहाँ आपस में एक दूसरे के प्रति जवाब देही थी।

सफर – सामुदायिक विकास एवं सामाजिक परिर्वतन में समुदाय आधरित संगठन एवं स्व सहायता समूह की किस तरह से महत्त्वपूर्ण भूमिका है?

सुश्री एस्तेर चक्रपाणी – महिलाओं को एकत्रित करना अपने आप में एक महान विचार है। महिलाओं को प्रभवित करके आप कई पीढ़ियों को प्रभावित कर सकते हैं। शिक्षित और सशक्त ना होते हुये भी वे घर पर हैं एवं अपनी संस्कृति, अपने पारिवारिक मूल्यों, व रीति रिवाजों को नयी पीढ़ीयों के मन में बैठा रहीं हैं। अतः यह महत्त्वपूर्ण है, कि महिलाओं को संगठित करें, सशक्त करें, एवं मूल्यों के साथ उनका व्यक्तित्व निमाण करें, जिससें कि वे इन मूल्यों को आगे, पीढ़ीयों को बढ़ा सकें जो कि उनके जीवनों के लिये लाभप्रद हैं। महिलाओं को लक्षित करके हम भविष्य की पीढ़ीयों को लक्षित कर रहे हैं। इसलिये यदि वे शिक्षित नहीं हैं तौभी शिक्षा के महत्त्व को समझते हुये वे अपने

बच्चों को शिक्षित करेंगी एवं ये बच्चे समुदाय में परिवर्तनों को लायेंगे।

सफर – अपनी परियोजना द्वारा अपनयी गयीं वे मुख्य रणनीतियां कौन सी थीं, जिन्हें समुदाय आधरित संगठन एवं स्व सहायता समूहों को सशकत बनाने के लिये सफल समझा जा सकता हैं?

सुश्री एस्तेर चक्रपाणी – हम स्व सहायता समूहों की मदद करते हैं कि वे स्वयं निर्णय लेने एवं समुदायों को वृहद स्तर पर प्रभावित करने के लिये स्वयं की सहायता कर सकें। इसके लिये हमने एक अभ्यास का पालन किया – हम उनके साथ उनके समुदायों के समूहों के लक्ष्यों व दर्शन, उनकी जवाबदेही पर बातचीत करते रहे, उनकी सहायता की कि वे समूह संबंधी मानकों, नियमों आदि का निर्धारण करें एवं स्पष्ट करें। इसके फलस्वरूप सदस्यों में समूह के स्वामित्व व जवाबदेही की समझ विकसित हुई।

- ❖ योजनाओं के निर्माण के दौरान समुदाय की सहभगिता परियोजना की सफलता के लिये महत्त्वपूर्ण हैं। प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित होने की अपेक्षा हम समुदाय को प्रोत्साहित करते हैं कि वे क्रियाकलापों को क्रियान्वित करे। सामान्यतः परियोजना के कार्यकर्ता ही समुदाय के लिये दर्शन का निर्धारण करते हैं लेकिन जो योजना निर्धारण में सहभागी ना हुआ हो वह उस दर्शन का स्वामी कैसे हो सकता है? अतः हमने उन्हें समुदायों के मुद्दों को समझने में सहायता की एवं उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे सोचें कि वे 10–15 वर्ष बाद अपने अपने समुदाय को किस तरह देखना चाहते हैं। इससे उन्हें सहायता मिली कि वे योजना निर्धारण में नेतृत्व करें एवं उसे क्रियान्वित करें व इससे उनके अंदर स्वामित्व की समझ विकसित हुई।
- ❖ हमारी भूमिका केवल समूहों के कार्यक्रयों के क्रियान्वयन में प्रशिक्षक की तरह होती है। हमारे पास अपने नियोजित गतिविधियां एवं कार्यक्रम थे, लेकिन यहाँ हमने अपनी शक्तियो व कौशल को इन समूहों को हस्तांतरित कर दिया है। अतः अब ये हैं – स्व सहायता समूह अथवा समुदाय आधारित संगठन – जिन्होंने नेतृत्व संभाल लिया है। परिणामस्वरूप समुहों के द्वारा समुदायों के लिये निर्धारित योजनायें स्व सहायता समूहों के द्वारा क्रियान्वित व नियंत्रित की जाती हैं। उन्होंने स्वयं ही समुदायों को संगठित किया व कुछ गतिविधियों के लिये पहल की जैसे – किशोरों के कौशल संबंधी कार्यक्रम, व्यस्क शिक्षा, पंचायती राज सदस्यों के लिये प्रशासनिक कार्यशाला स्वं स्कुल स्वास्थय कार्यक्रमों का निर्देशन।

सफर – कृपया आप अनुभवों के आधार पर कुछ ऐसे उदाहरणों को बतायें जहाँ स्व सहायता समूहों व समुदाय आधरित संगठनों के द्वारा महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन/सशक्तिकरण लाया गया।

सुश्री एस्तेर चक्रपाणी – ऐसे परिवर्तनों के अनेक उदाहण हैं जैसे:

- ❖ **बेहतर जीवन –** महिलाओं के जीवन जीने के तरीके में सुधार देखा गया (उदा–पहले की अपेक्षा अधिक सफाई से रहने लगीं)
- ❖ **निर्णय लेना –** वे निर्णय लेने में सक्षम हुईं एवं समूह की गतिविधियों में सहभागी होने लगी एवं वे पहले से अधिक प्रतियोगात्मक हुईं।
- ❖ **लघु उपक्रमों की पहल –** जितनी बार वे एकत्रित होते थे उतनी ही बार वे दर्शन के बारे में बातचीत करते थे एवं उसके आधार पर वे छोटी गतिविधियों को विकसित करते थे जैसे मशरूम का उत्पादन करना एवं उपलब्ध संसाधनों का दोहन करना, जोकि सशक्तिकरन का एक मुख्य चिन्ह है। जब वे आत्म विश्वासी होते थे एवं पूर्ण जानकारी विकसित कर लेते थे तब वे संसाधनों के संबंध में बातचीत करते थे। उदाहरण के लिये वे उधानविधा (बागवानी) विकासखण्ड विभाग में गये एवं वहाँ उन्होंने मशरूम की

पैदावार संबंधी प्रशिक्षण के लिये बातचीत की। वे मशरूम का उत्पादन करने में सक्षम हुये जिसकी गुणवत्ता बहुत अच्छी थी एवं उसे बाजार में विक्रय करने लगे। यह उन्होंने एक सहकारिता के तहत किया। इसके अलावा प्रत्येक समूह ने अनेक लधुउपक्रम प्रारंभ किये जैसे कि अचार, जैम व मसालों का निर्माण एवं इससे प्राप्त आय सदस्यों में बाटी जाती थी।

- ❖ साक्षरता केंद्र – स्व सहायता समूहों ने असाक्षर लड़कियों की सूची तैयार की एवं उनके लिये साक्षरता समूहों को प्रारंभ किया।
- ❖ **वित्तीय रूप से सशक्त –** अपने जीवन यापन संबंधी निर्णय लेने के लिये वे सक्षम हुयी एवं घरेलू खर्चों में योगदान देने लगीं एवं समूहों के द्वारा वे सिर्फ समूह के सदस्यों को नहीं बल्कि बाहरी लोगों को भी ऋण देने लगे। एक बार उनके क्षेत्र के बैंक ने उन्हें संपर्क किया कि वह उन्हें ऋण देना चाहता है, चूंकि यह उस बैंक का वार्शिक लक्ष्य था। किंतु समूह ने बैंक को यह कह कर मना कर दिया कि उनके पास पर्याप्त धन है व वे स्वावलंबी हैं।
- ❖ **मधपान के विरोध में कदम उठाना –** मदिरा बेचने के विरोध में उन्होंने अपनी आवाज़ बुलंद की एवं यह निर्णय लिया कि ऐसे किसी ऐसे किसी भी आदमी के लिये घर के दरवाजे नहीं खोले जायेंगे जो कि मदिरा पी कर आया हो। समुदाय के पुरूषों में इसका बहुत प्रभाव पड़ा।

सफर – स्व सहासता समूहों एवं समुदाय आधरित संगठनों के साथ कार्य करने के दौरान आपने किन मुख्य चुनौतियों का सामना किया?

सुश्री एस्तेर चक्रपाणी–

- ❖ समुदायों के साथ प्रारंभ करना, उदाहरण प्रारंभ में समुदाय में लोगों को शिक्षा के महत्त्व के बारे में समझाना कठिन था।
- ❖ स्थानीय प्रशासन से सहयोग प्राप्त करना। कभी कभी यह संघर्षपूर्ण होता था क्योंकि हमारे पास अपनी नियोजित गतिविधियां थी। अतः हमने समुदाय आधारित संगठनों के साथ कार्य किया एवं उन्होंने लोक सरकार के साथ, बातचीत की। इस तरह से गतिविधियों को एकीकृत कर इस मुद्दे को सुलझाया गया।
- ❖ साक्षरता केंद्रों के लिये सरकारी संसाधनों की उपलब्धता। उन्हें असाक्षरता के बारे में समझाना कठिन था क्योंकि उन लोगों ने पहले से ही उस क्षेत्र को 100: साक्षर घोषित कर दिया था।

सफर – सामुदायिक विकास के लिये गैर सरकारी संगठनों की क्या मुख्य भूमिकायें होती हैं? एवं वे किस तरह सामाजिक परिवर्तन के लिये अधिक प्रभावकारी कार्यकर्ता हो सकते हैं?

सुश्री एस्तेर चक्रपाणी– गैर सरकारी संगठनों के पास समुदाय संबंधी विस्तृत ज्ञान होना चाहिये एवं उनके साथ अच्छे संबंध होने चाहिये जिससे समुदाय के लोग उनके साथ अपने मुद्दे साझा कर सकें। गैर सरकारी संगठन योजनाओं को सुगम बनाने में मदद करें व समुदाय इसमें मुख्य भूमिका अदा करें।

समुदायों को लंबे समय तक सहयोग की आवश्यकता होती है। (हमेशा वित्तीय रूप से नहीं) जब तक दूसरी पीढ़ी जिम्मेदारी लेना प्रारंभ नहीं करती। ऐसा इसलिये क्योंकि नई पीढ़ी को विश्वास हासिल करने व समुदाय के भीतर व बाहर सच्चे संबंधों को स्थापित करने में समय लगता है।

समुदाय द्वारा चलित किसी भी परियोजना को सफलतापूर्वक संपादन में 3–4 वर्ष का समय लगता है (ये वित्तीय वर्ष भी हो सकते हैं) जब तक ये स्वावलंबी नहीं हो जाते।

सफर : क्या आप हमारी सहायता कर सकती हैं कि हम उन परियोजना कार्यकर्ताओं के लिये ऐसे संसाधनों को संपर्क कर सकें जो कि स्व सहायता समूह व समुदाय आधरित संगठनों के लिये सहायक हैं?

स्व सहायता समूहों एवं समुदाय आधारित संगठनों का उद्गम बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक में पाया जाता है, जहाँ परमेश्वर ने सभी चीजों का सृजन किया एवं मनुष्य को इन सभी सृजनों का ध्यान रखने की जिम्मेदारी दी। परमेश्वर ने आदम व हव्वा से अपेक्षा की कि वे संयुकत रूप से इस कार्य को करें एवं इस आर्शीवाद के साथ अच्छे भंडारी बनें कि वे इन सभी चीजों को बढ़ाते जायें।

आंध्रप्रदेश में गरीबी उन्मूलन के कार्यक्रमों को स्व सहायता समूह के माध्यम से लागू करना केंद्र एवं राज्य सरकारो एवं संस्थाओं का कालांतर में प्रयास रहा है। कहानी 1979 से समाकेतिक ग्रामीण विकास कार्यक्रम के राष्टीय क्रियान्वयन से प्रारंभ होती है जिसमें सबसे गरीब तबके को लक्षित किया गया। इसी के एक भाग के तौर पर भारत सरकार ने ग्रामीण इलाकों में 1982–83 में महिला एवं बाल विकास की क्रांति प्रारंभ की। हालांकि इस विचार को मुनाफा और लेन देन की समझ से लागू किया जाता है, परंतु इसमें समूह निर्माण, परिपक्वता, निरंतरता एवं कार्यशीलता आते है और समूह को इस स्तर तक ले जाना होता है कि आयवर्धक गतिविधियों, आर्थिक स्वावलंबन एवं स्वयं को विकसित करना संभव हो सके। स्व सहायता समूह एवं समुदाय आधारित संगठनों की सफलताओं एवं विफलताओं के आंकलन के निश्चित नतीजे आये हैं। ये कार्यक्रम ना सिर्फ सदस्यों के लिये बल्कि समुदायों के लिये भी फायदेमंद साबित हुये हैं, यह आज भी नेटवर्किंन एवं प्रभाव को बड़े क्षेत्र में पहुँचाने के बेहतर माध्यम है।

वकालत करने के लिये स्व सहायता समूह एवं समुदाय आधारित संगठन ऐसे शस्त्र हैं जो कि समुदाओं के विकास एवं कल्याण को सुनिश्चित करते हैं। यह लोगों की मजबूत सामूहिक आवाज होती है जिसके द्वारा वे अपने जीवन को प्रभावित करने वाले मुद्दों को सुलझाते हैं। सरकारी संस्थाओं एवं अधिकारियों से संवाद एवं मोल भाव करने के लिये वे बेहतर सुसज्जित होते हैं। अतीत में उनके सामुहिक प्रयास बड़े प्रभावी रहे हैं और हमारे परियोजनाओं में बहुत सारी सफलताओं की कहानियाँ हैं, हालांकि इन समूहों की निरंतरता एक चुनौती रही है। इनको मज़बूत करने के द्वारा हम लोकतंत्र को मज़बूत करते हैं।

अकसर समुदाय आधारित संगठनों का निर्मान आघात योग्य समूहों को सशक्त करने के लिये किया जाता है। बीमारी से ग्रसित लोगों का समूह बनाना जिनको जीवन पर्यंत स्वास्थय देखभाल की ज़रूरत हो जैसकि एच. आई. वी., एड्स से ग्रसित एक असमान्य सी बात है। जबकि हम असंक्रामक बीमारियों के बढ़ते प्रभाव से जूझ रहे हैं तो यह अच्छा होगा कि मधुमेह, रकतचाप आदि से ग्रसित लोगों के समूह बनाया जायें ताकि वे जानकारी के द्वारा अपनें स्वास्थय मुद्दों को सुलझा सकें। यह स्वास्थय विभाग के इन मुद्दों को जो कि ग्रामीण भारत में फैल रहे हैं को सुलझाने के तरीकों में सुधार ला सकता है। समुदाय आधारित संगठन किसी भी मुद्दे पर बहुत कम खर्च में जागरूकता ला सकते हैं। मुद्दे को षहर में चर्चा का विशय बनाने के लिये यह अच्छा है कि उसकी चर्चा समूहों में की जाये।

जो हम सामूहिक रूप से कर सकते हैं वह व्यकितगत रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। पकी फसल बहुत है अतः ज़रूरत है कि हम एक हों ताकि दूसरों को एक कर सकें और कटनी करके उसके बेहतर भंडारी बनें।

[1]http://www.rd.ap.gov.in/RTI_act/PDF's/RD_RTI_IB.pdf

शासन एवं वित्तीय प्रबंधन – एक परिचय

(श्री वर्धराजन श्रीनिवास, वित्त प्रबंधन, सामुदायिक स्वास्थय परियोजनायें)

एक कहानी (संभवतः सत्य) : वार्षिक लेखा परीक्षण चल रहे थे तथा लेखा परीक्षक नगद सत्यापन की जानकारी विभिन्न नगद धड़ो (Denomination) सहित मांग रहे थे। प्रबंधक द्वारा दिये गये वकतव्य ने मुझे चकित कर दिया क्योंकि उसने कहा था कि इस क्षेत्र में केवल एक धड़ (Denomination) है और वह है ''दक्षिण भारत की कलीसिया''।

इस घटना ने मुझे यह सोचने पर मज़बूर कर दिया, कि हम किस तरह से वरिष्ठ परियोजना कार्यकर्ताओं को प्रशासनिक एवं वित्तीय व्यवस्थाओं के प्रति संवेदी बना सकते हैं व उनकी क्षमताओं का विकास कर सकते हैं। मैंने महसूस किया कि '''सफर' के द्वारा हम आप सबसे वार्तालाप कर सकते हैं।

''क्या सफर में प्रशासकनिक व वित्तीय मुद्दों के लिये स्थान की आवश्यकता हैं? यह पश्न वार्षिक रिर्पोटिंग सभा में पूछा गया। सर्वसम्मति में उसका जवाब ''हाँ'' में देखकर मैं अत्यंत उत्साहित हो गया।

मैं ध्यान करने लगा कि इसमें क्या होना चाहिये, और मैंने यह सूची तैयार की : 1) अच्छे प्रशासन व वित्तीय व्यवस्था होने की आवश्यकता ;2) स्तर व व्यवस्थायें; 3) दान देने वालों की अपेक्षायें; 4) वित्तीय रिपोर्टिंग प्रारूप को पुनः देखना 5) MICAH वित्तीय रिपोटिंग प्रारूप को पुनः देखना 6) संस्था की छोटी पुस्तकों का उपयोग किस तरह करना चाहिये; इसके अलावा वो सभी बातों जो सामने आती हैं। मैं यहाँ से प्रारंभ करने की इच्छा रखता हूँ।

अच्छी व्यवस्था की ज़रूरत : केस अध्यन– एक अस्पताल में वहाँ के कर्मचारियों को व्यक्तिगत इस्तेमाल के लिये अस्पताल की गाड़ी मिल जाती थी। इसके लिये प्रशासक को निवेदन देना पड़ता था और वह इस्तेमाल की अनुमति चालक या रखरखाव के कर्मचारी से पूछ कर दे देता था हालांकि मुख्य प्रंबधक इस अनुमति को निरस्त कर सकता था। सभी कर्मचारियों को इस प्रक्रिया की जानकारी थी क्योंकि यह हाल ही में प्रारंभ की गई थी व कर्मचारी बैठक में इसके बारे में बताया गया था।

यह स्पष्ट है कि एक व्यवस्था तो है परंतु वह निश्चय नहीं है तथा अनुमति की व्यवस्था में शामिल सभी व्यक्तियों को सूचित नहीं किया जाता है। इस वजह से यह संभावना है कि कोई कर्मचारी सोचे कि उसे गाड़ी नहीं मिली तो इसके कोई व्यक्तिगत कारण हैं। यदि व्यवस्था बनाते समय इस पहलू को सोचा होता तो इसका हल उसमें शामिल कर लिया गया होता तथा या तो व्यक्ति को अनुमति मिलती अथवा अनुमति निरस्त होने की दषा में उसे स्पष्ट कारण ज्ञात होते। प्रतिदिन होने वाली सभी गतिविधियां जिसमें अनेक विभगों के कर्मचारी विभिन्न स्तर पर संलग्न होते है के लिये अच्छी व्यवस्थओं का होना अच्छा होता है।

एक अच्छी व्यव्स्था है :

- ★ गतिशील एवं संलग्न लोगों की आवश्यकता के अनुरूप
- ★ मनकों को इतना खरा बनाना कि व्यक्तियों के आधार पर निर्णय लेना कम हो सके।
- ★ जो भी लोग इस व्यवस्था में संलग्न हैं उन सभी को ये जानकारी साझा हो अकसर लिखित फार्म में भी उपलब्ध होता है।

अच्छी व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है :

- ★ कि सभी प्रक्रियायें तेज़ी से व आसानी से संपादित हो रही हैं।
- ★ कि अच्छी व्यवस्था होने से इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता कि लक्षित कार्य को कौन कर रहा है
- ★ और इसी तरह से....

चूंकि यह परिचयात्मक सत्र है इसलिय अब मैं इस विश्वास के साथ यहीं समाप्त करता हूँ कि मैं कुछ गंभीर मुद्दों के साथ पुनः लौटुंगा।....

इस सत्र के विषयों पर टिप्पणी व सुझावों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ।

vardharajan@eha-health.org and +919560900978

सी. एच. डी. पी. अर्द्ध वार्षिक रिपोर्टिंग सभा
तस्वीर – थॉमस जॉन

सीएचडीपी समाचार

★ सी. एच. डी. पी. की अर्द्ध वार्षिक रिर्पोटिंग सभा 27 से 29 अक्टूबर को दिल्ली के नवीनता रिट्रीट केंद्र में आयोजित हुई थी।

एच.आर. गतिविधियाँ

नयी नियुक्तियां

नाम	पद	परियोजना
श्री. मायोंज़ा तुंगशांग	परियोजना कोऑर्डिनेटर सेफ माइग्रेरूशन	सेन्ट्रल ऑफिस दिल्ली
श्रीमती शिल्पा नितिन ठाकुर	प्रषिक्षण एवं डाक्यूमेंटेषन अधिकारी	सेन्ट्रल ऑफिस दिल्ली
श्रीमती अतुल गॉडविन सिंह	परियोजना अधिकारी	ACT, डंकन
श्री एडिसन नॉरज़री	परियोजना अधिकारी	ACT, डंकन
सुश्री तृष्णा खडका	परियोजना सहासक	करूणा परियोजना, डंकन
श्री हुडीरोम प्रेमजीत सिंह	फिज़ियोथेरपिस्ट	संवेदना, लैडूंर
सुश्री–लिली रेचल सुभाश	औक्यूपेशनल थेरपिष्ट	संवेदना, लैडूंर
आर. थावामनी	परियोजना प्रबंधक	सी. एच. प्रेम ज़्योति
दामा खिल्लो	परियोजना अधिकारी	एम. सी. एच. छत्तरपुर
अनिल कुमार कुरिल	परियोजना सहासक	एम. सी. एच. छत्तरपुर

सफर का अगला अंक

सफर का अगला अंक केंद्रित है

जीविका

कृपया अपने योगदान फेबा प्रकाश को भेजें।
(fjacob@eha-health.org)

संपादक – कारेन मथियास
सह संपादक – फीबा जैकब
लेआउट और ग्राफिक – सुनालिएन तांगपुआ

Click to download this issue in .pdf

हमसे सम्पर्क के लिए
808/92, दीपाली बिल्डींग,
नेहरू प्लेस, नई दिल्ली–110019
फोन न.: 011–3088–2008 और 3088–2009
वेब: www.eha-health.org

FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY